

हर घंटे 100 कब्र क्यों खोद रही है अमेरिकी सेना ?

क्या होने वाला है ?

BY - SUNIL VERMA SIR

Firstpost

Why is the US training its soldiers for mass burials after more than 70 years?



Amid a looming Iran war threat, the US Army is training its troops to dig mass battlefield graves that have not been needed since the Korean...

19 hours ago

Reuters Connect

Families visit the graves of their loved ones at the Chaveña Municipal Cemetery during the Day of the Dead celebrations



Families visit the graves of their loved ones at the Chaveña Municipal Cemetery during the Day of the Dead celebrations.

7 hours ago

India Today

US trains soldiers to dig mass graves after decades amid looming Iran war threat



The US Army has resumed mass battlefield burial training for the first time since the Korean War. The drills prepare personnel to manage,...

3 days ago

تسنیم

US Army Prepares Mass Soldier Graves for Potential High-Casualty War on Iran



TEHRAN (Tasnim) – The US Army has conducted its first large-scale mass burial preparations in decades, testing its ability to handle...

2 days ago

Yahoo

Fact Check: Photos show US Army practicing digging mass graves



Claim: In October, U.S. Army soldiers were photographed while practicing digging mass graves for "for large-scale battlefield temporary...

10 hours ago

The Economic Times

'If we went to war tomorrow...': US Army conducts mass battlefield grave-digging exercise, first since Kor



The US Army recently undertook a significant military exercise addressing the critical issue of temporary burial sites for fallen troops.

2 days ago

News18 Hindi

कब्र क्यों खोद रही है अमेरिकी सेना? ट्रेनिंग में जुट गए फौजी, हर घंटे 100 बॉडी दफनाने की तैयारी



अमेरिकी सैनिकों को युद्ध के मैदान में मारे जाने वाले जवानों के लिए सामूहिक...

14 hours ago

NewsBytes

अमेरिकी सेना 1950-1953 के बाद फिर खोद रही सामूहिक कब्रें, क्या बड़ा युद्ध होने वाला है?



अमेरिका की सेना ने एक बार फिर सैनिकों को सामूहिक रूप से कब्र में दफनाने के लिए...

3 days ago


N
W
E
S
CANADA
Pacific Ocean
UNITED STATES
Atlantic Ocean
NORTH CAROLINA
RUSSIA
ALASKA
CANADA
Pacific Ocean
HAWAII
MEXICO
Gulf of Mexico
CUBA
0
500
1,000 Kilometer
0
500
1,000
1,500 Miles













ऐतिहासिक अभ्यास: अमेरिकीं सेना ने नॉर्थ कैरोलिना में बड़े पैमाने पर अस्थायी सामूहिक कब्रें **(Temporary Mass Graves)** खोदने का विशेष सैन्य अभ्यास किया है। 1950-53 के **कोरियाई युद्ध** के बाद यह पहला मौका है जब अमेरिकीं सेना ने इस स्तर की ड्रिल की है।



बड़ी संख्या में मौत की आशंका: इस ट्रेनिंग का उद्देश्य भविष्य के किसी भीषण और बड़े युद्ध **(High-Intensity Warfare)** के दौरान भारी संख्या में सैनिकों के हताहत होने की स्थिति से निपटना है। **इराक** और **अफगानिस्तान युद्धों** के विपरीत, यदि भविष्य में ऐसी स्थिति बनती है जहां युद्ध के मैदान से शवों को तुरंत एयरलिफ्ट या बाहर भेजना संभव न हो, तो यह प्रक्रिया अपनाई जाएगी।





क्षमता और समय: इस अभ्यास के दौरान मिलिट्री इंजीनियरों ने बुलडोजर और भारी मशीनों की मदद से तेजी से खंदकें (Trenches) खोदीं। योजना के मुताबिक, एक सुसज्जित इंजीनियर कंपनी निरंतर काम करते हुए **24 घंटे** में करीब **2,400 शवों** (यानी औसतन **हर घंटे लगभग 100 बॉडी**) को दफनाने की क्षमता का आकलन और अभ्यास कर रही है।





सम्मान और पहचान सुरक्षित रखना: इस ट्रेनिंग में केवल कब्र खोदना ही नहीं, बल्कि सैन्य पादरियों (Chaplains) और **मेडिकल टीमों** को भी शामिल किया गया है ताकि युद्ध के मैदान में नियमों व धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए शवों को दफनाया जा सके, ताकि बाद में हालात सामान्य होने पर उनकी पहचान कर उन्हें सम्मानपूर्वक उनके परिवारों को सौंपा जा सके।





अमेरिकी सेना द्वारा इतने बड़े पैमाने पर अस्थायी सामूहिक कब्रें **(Mass Graves)** खोदने और सैनिकों को दफनाने की त्वरित प्रक्रिया का अभ्यास करना एक **रणनीतिक और रणनीतिक-लॉजिस्टिक्स अभ्यास (Strategic & Logistical Preparation)** है।



1. 'ग्रेट पावर कॉनफ्लिक्ट' (Peer-to-Peer Warfare) की तैयारी



पिछले दो दशकों में अमेरिकी सेना ने इराक और अफगानिस्तान जैसे देशों में **'काउंटर-इंसर्जेंसी'** (आतंकवाद विरोधी) युद्ध लड़े हैं, जहाँ उनका पूरा हवाई वर्चस्व **(Air Superiority)** था। वहाँ सैनिक हताहत होने पर उन्हें तुरंत एयरलिफ्ट करके आधुनिक फील्ड अस्पतालों या वापस अमेरिका भेज दिया जाता था।





लेकिन अब वैश्विक परिदृश्य बदल चुका है। **चीन** या **रूस** जैसी सैन्य महाशक्तियों **(Peer Competitors)** के साथ संभावित युद्ध की स्थिति में **एयर स्पेस** पूरी तरह सुरक्षित नहीं रहेगा। ऐसे उच्च-तीव्रता वाले युद्ध **(High-Intensity Warfare)** में प्रतिदिन सैकड़ों या हजारों सैनिक हताहत हो सकते हैं, जहाँ तुरंत एयरलिफ्ट करना असंभव होगा।



2. ‘लॉजिस्टिक्स ब्लॉक’ और लॉजिस्टिकल सीमाएं



किसी भीषण युद्ध में दुश्मन देश **एयर-स्ट्राइक**, मिसाइल डिफेंस या **इलेक्ट्रॉनिक वॉरफ़ेयर** के जरिए सप्लाई लाइनों और ट्रांसपोर्ट विमानों (जैसे **C-17** या **C-130**) की आवाजाही को पूरी तरह रोक सकता है।





- जब शवों को वापस देश भेजने **(Repatriation)** के रास्ते बंद हो जाएंगे, तब युद्ध क्षेत्र में बीमारी फैलने से रोकने और स्वच्छता **(Sanitation)** बनाए रखने के लिए शवों को तुरंत अस्थायी रूप से दफनाना एकमात्र व्यावहारिक विकल्प बचता है।



3. जैविक/रासायनिक हथियार या महामारी का खतरा (CBRN Threats)



यदि भविष्य में किसी युद्ध के दौरान **जैविक (Biological)**, **रासायनिक (Chemical)** या **परमाणु (Nuclear)** हथियारों का इस्तेमाल होता है, तो हताहतों के शव अत्यधिक जहरीले या रेडियोएक्टिव हो सकते हैं।



- ऐसे दूषित **(Contaminated)** शवों को सामान्य प्रक्रिया से एयरलिफ्ट करना या लंबे समय तक रखना अन्य सैनिकों के लिए भी जानलेवा हो सकता है।



- ऐसे में संक्रमित या दूषित शवों को तुरंत वहीं सुरक्षित तरीके से दफनाना **(Mass Burial Protocol)** ही सबसे सुरक्षित कदम माना जाता है।



4. कोल्ड वॉर डॉक्ट्रिन की वापसी (Doctrine Revision)





अमेरिकी रक्षा मंत्रालय **(Pentagon)** अपनी पुरानी युद्ध नीतियों और **'Graves Registration'** मैनुअल को अपडेट कर रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध और कोरियाई युद्ध के समय अमेरिका के पास यह स्थापित मानक प्रक्रिया **(SOP)** थी, जिसे लंबे समय तक ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था। अब बदलती वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों (जैसे ताइवान स्ट्रैट संकट या पूर्वी यूरोप में तनाव) को देखते हुए पुरानी युद्ध प्रणालियों को दोबारा सक्रिय **(Re-activate)** किया जा रहा है।



3. जैविक/रासायनिक हथियार या महामारी का खतरा (CBRN Threats)



यदि भविष्य में किसी युद्ध के दौरान **जैविक (Biological)**, **रासायनिक (Chemical)** या **परमाणु (Nuclear)** हथियारों का इस्तेमाल होता है, तो हताहतों के शव अत्यधिक जहरीले या रेडियोएक्टिव हो सकते हैं।



- ऐसे दूषित **(Contaminated)** शवों को सामान्य प्रक्रिया से एयरलिफ्ट करना या लंबे समय तक रखना अन्य सैनिकों के लिए भी जानलेवा हो सकता है।



- ऐसे में संक्रमित या दूषित शवों को तुरंत वहीं सुरक्षित तरीके से दफनाना **(Mass Burial Protocol)** ही सबसे सुरक्षित कदम माना जाता है।



4. कोल्ड वॉर डॉक्ट्रिन की वापसी (Doctrine Revision)





अमेरिकी रक्षा मंत्रालय **(Pentagon)** अपनी पुरानी युद्ध नीतियों और **'Graves Registration'** मैनुअल को अपडेट कर रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध और कोरियाई युद्ध के समय अमेरिका के पास यह स्थापित मानक प्रक्रिया **(SOP)** थी, जिसे लंबे समय तक ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था। अब बदलती वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों (जैसे ताइवान स्ट्रैट संकट या पूर्वी यूरोप में तनाव) को देखते हुए पुरानी युद्ध प्रणालियों को दोबारा सक्रिय **(Re-activate)** किया जा रहा है।



5. पहचान सुरक्षा और डीएनए रिकॉर्डिंग (Forensic & Legal Compliance)

सामूहिक कब्र खोदने का अभ्यास केवल गड्ढा खोदना नहीं है, बल्कि एक जटिल **कानूनी और नैतिक प्रक्रिया** का हिस्सा है:



- युद्ध की अराजकता में भी हर शव का **DNA** नमूना, **डॉग टैग (Dog Tag)** और **जीपीएस लोकेशन** रिकॉर्ड की जाती है।



- इससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि भविष्य में जब युद्ध समाप्त हो, तब इन अस्थायी कब्रों से अवशेषों को निकालकर पहचान के साथ उनके **सम्मानजनक अंतिम संस्कार** के लिए परिजनों को सौंपा जा सके।



हाल ही में **ब्रिटेन, यूरोपीय देशों** (जैसे नॉर्वे, स्वीडन और यूरोपीय संघ की साझा रणनीति) और **अमेरिका** द्वारा नागरिकों को अपने घरों में **7 से 10 दिनों का आपातकालीन स्टॉक (Emergency Stockpile)** जुटाने की सलाह देना और अमेरिकी सेना द्वारा सामूहिक कब्रें खोदने का अभ्यास करना, इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वैश्विक स्तर पर सरकारें **"सबसे खराब स्थिति" (Worst-Case Scenario)** के लिए खुद को तैयार कर रही हैं।



1. 'पीयर-टू-पीयर वारफेयर' और संभावित वैश्विक संघर्ष (High-Intensity Geopolitical Conflict)





- **कारण:** पिछले कुछ वर्षों में **अमेरिका, रूस, चीन** और यूरोपीय देशों के बीच तनाव अपने चरम पर है (विशेषकर **पूर्वी यूरोप और ताइवान/इंडो-पैसिफिक** क्षेत्र को लेकर)। पश्चिमी देशों की खुफिया रिपोर्टों और रणनीतिकारों का मानना है कि यदि कोई बड़ा प्रत्यक्ष सैन्य टकराव **(World War या Direct Power Clash)** होता है, तो वह आधुनिक तकनीक से लैस होगा, जिसमें भारी तबाही और सैनिकों व नागरिकों का बड़ा नुकसान हो सकता है।



2. ‘हाइब्रिड और साइबर खतरे’ और क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमले (Hybrid & Cyber Warfare)



- **कारण:** आधुनिक युद्ध केवल सीमा पर बंदूकों से नहीं लड़े जाते। आज के दौर में **साइबर अटैक** और **सैबोटाज (तोड़फोड़)** बहुत बड़े खतरे बन गए हैं।



- **खतरा:** दुश्मन देश **बिजली ग्रिड (Power Grids)**, पानी की सप्लाई, **इंटरनेट के अंडरसी केबल्स (Subsea Cables)**, और वित्तीय नेटवर्क को एक ही झटके में ठप कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में, यदि बिजली और जलापूर्ति कई दिनों तक कट जाए, तो नागरिकों को बचाने के लिए घरों में राशन और पानी का स्टॉक होना जरूरी माना जा रहा है।



3. ग्लोबल सप्लाई चेन का टूटना (Supply Chain Vulnerabilities)



- **कारण:** भू-राजनीतिक तनाव और **व्यापार युद्धों (Trade Wars)** के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं बेहद संवेदनशील हो गई हैं। यदि संघर्ष बढ़ता है, तो जरूरी सामानों (जैसे **दवाइयां, ईंधन, अनाज, और फर्टिलाइज़र)** का आयात-निर्यात अचानक बंद हो सकता है। सरकारें चाहती हैं कि संकट के शुरूआती हफ्तों में नागरिक बाहरी मदद पर निर्भर रहने के बजाय अपने स्तर पर आत्मनिर्भर रहें।



4. जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएं (Extreme Climate Disasters)



- **कारण:** केवल युद्ध ही नहीं, बल्कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण लगातार आ रहे भीषण **बाढ़, चक्रवात, जंगल की आग (Wildfires)** और चरम मौसम की घटनाएं भी सरकारों को चिंतित कर रही हैं।

- नार्वे और अन्य यूरोपीय देशों की गाइडलाइंस स्पष्ट कहती हैं कि ये तैयारियां **"चरम मौसम, महामारियों, औद्योगिक दुर्घटनाओं और युद्ध"**—इन सभी से निपटने के लिए हैं।



5. ऊर्जा संकट और ईंधन की निर्भरता (Energy Security)



- **कारण:** यूरोप पहले ही **रूस-यूक्रेन युद्ध** के बाद गैस और ऊर्जा आपूर्ति के संकट का सामना कर चुका है। सर्दियों के मौसम में यदि ऊर्जा आपूर्ति बाधित होती है, तो **हीटिंग और बिजली** के संकट से आम जनता को बचाने के लिए यह जरूरी समझा जा रहा है कि हर घर बुनियादी **ईंधन, गर्म कपड़े** और **टॉर्च/पावर बैंक** जैसी चीजें पहले से संचित रखे।





वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव, महाशक्तियों के बीच संभावित टकराव और सप्लाई चेन के टूटने जैसे संकटों का सीधा असर दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ता है। इस तरह के घटनाक्रम का **भारत की अर्थव्यवस्था, वैश्विक अर्थव्यवस्था, मुद्रास्फीति (Inflation)** और **बेरोजगारी (Unemployment)** पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसे निम्नलिखित प्रमुख आयामों के माध्यम से समझा जा सकता है:



1. मुद्रास्फीति और महंगाई (Inflation & Price Rise)



किसी भी बड़े भू-राजनीतिक संघर्ष या आपूर्ति श्रृंखला के संकट का सबसे पहला और गहरा असर **महंगाई** पर पड़ता है।



- **कच्चे तेल (Crude Oil) और ऊर्जा के दाम:** भारत अपनी कुल ऊर्जा और कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग **85%** आयात करता है। यदि संघर्ष **पश्चिम एशिया (Middle East)** या अन्य प्रमुख ऊर्जा उत्पादक क्षेत्रों तक फैलता है, तो शिपिंग मार्ग और तेल के कुएं बाधित होंगे। इससे क्रूड ऑयल की कीमतें आसमान छूएंगी, जिससे भारत में **पेट्रोल-डीजल, परिवहन (Logistics)** और **बिजली** की लागत तुरंत बढ़ जाएगी।





- **खाद्य और उर्वरक महंगाई:** संघर्ष के कारण फर्टिलाइज़र (जैसे पोटाश और फॉस्फेटिक खाद) और कृषि कच्चे माल का आयात महंगा हो जाता है, जिससे देश में **खाद्यान्न की कीमतें बढ़** सकती हैं।





- **आयातित मुद्रास्फीति (Imported Inflation):** जब बाहर से आने वाली हर चीज महंगी हो जाती है, तो देश के भीतर हर रोज इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं और सेवाओं के दाम बढ़ जाते हैं, जिससे आम जनता की **क्रय शक्ति (Purchasing Power)** कम हो जाती है।



2. भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (Impact on Indian Economy)



– **राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) पर दबाव:** तेल और जरूरी सामानों के आयात महंगे होने पर सरकार को **सब्सिडी (जैसे उर्वरक और ईंधन पर)** बढ़ानी पड़ती है। इससे सरकारी खजाने पर भारी बोझ पड़ता है और विकास कार्यों के लिए मिलने वाला फंड कम हो जाता है।





– **रूपये की कमजोरी और चालू खाता घाटा (CAD):** विदेशी मुद्रा का बड़ा हिस्सा ऊर्जा आयात में जाने से भारतीय रूपया डॉलर के मुकाबले कमजोर हो सकता है, जिससे आयात और अधिक महंगा हो जाता है।





– **औद्योगिक मंदी:** विनिर्माण **(Manufacturing)** उद्योगों को यदि समय पर कच्चे माल और इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट्स **(जैसे सेमीकंडक्टर)** नहीं मिले, तो उत्पादन धीमा पड़ जाएगा। हालांकि, **डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग** जैसे कुछ क्षेत्रों को सरकारी खर्च बढ़ने से फायदा मिल सकता है।



3. वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (Global Economic Impact)



– **आर्थिक विखंडन (Geo-Economic Fragmentation):** दुनिया वैश्वीकरण (Globalization) से दूर होकर अलग-अलग व्यापारिक ब्लॉकों में बंट जाएगी। देश **"फ्रेंड-शोरिंग" (मित्र देशों से व्यापार)** या आत्मनिर्भरता पर जोर देंगे, जिससे वैश्विक व्यापार की गति धीमी हो जाएगी।





– **निवेश में मंदी (Investment Pessimism):** अनिश्चितता का माहौल होने पर वैश्विक निवेशक शेयर बाजारों और जोखिम भरे प्रोजेक्ट्स से अपना पैसा निकालकर सुरक्षित परिसंपत्तियों **(जैसे सोना और अमेरिकी बॉन्ड)** में निवेश करने लगते हैं, जिससे विकास दर **(GDP Growth)** प्रभावित होती हैं।



4. बेरोजगारी और श्रम बाजार पर प्रभाव (Unemployment & Labor Market)



– **औपचारिक क्षेत्र में सुस्ती:** जब वैश्विक मांग घटती है और लॉजिस्टिक्स महंगे होते हैं, तो निर्यात-उन्मुख **(Export-oriented)** उद्योगों और टेक/मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में कंपनियों का मार्जिन कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में कंपनियाँ **छंटनी (Layoffs)** या नई भर्तियों पर रोक लगा सकती हैं।





– **असंगठित और गिग इकोनॉमी पर मार:** महंगाई बढ़ने के कारण जब आम लोग खर्च करना कम कर देते हैं, तो इसका सीधा असर खुदरा बाजार, रेस्टोरेंट, डिलीवरी और छोटे व्यवसायों पर पड़ता है। इससे दिहाड़ी मजदूरों और **गिग वर्कर्स (Gig Workers)** के रोजगार पर गंभीर संकट आ जाता है।



Thanks For Watching

Learn
Share
Grow
Together ♡

Better
Students
Brighter
Tomorrow

Follow us for more Updates

@RRESULTMITRAOFFICIAL

Join our Telegram

@SUNILVERMA_THEIASMENTOR

Follow on Instagram

Result Mitra

Subscribe Now

Stay Connected



